Joint Issue of India and the Islamic Republic of Iran

India-Iran relations span millennia marked by meaningful interactions. The two countries shared a border till 1947 and share several common features in their languages, cultures and traditions. India and Iran established diplomatic links on March 15, 1950. In addition to the Embassy in Tehran, India has two Consulates in Iran, one in Bandar Abbas and other in Zahedan. The two countries have in place Bilateral Consultative Mechanisms at various levels which meet regularly. Foreign Offices of both countries also hold regular consultations on bilateral and regional issues.

India-Iran relationship enjoys economic and commercial ties covering many sectors though it has traditionally been dominated by Indian import of Iranian crude oil. The India-Iran bilateral trade during the fiscal year 2016-17 was USD 12.89 billion. India imported USD 10.5 billion worth of goods, mainly crude oil, and exported commodities worth USD 2.4 billion. Major Indian exports to Iran include rice, tea, iron and steel, organic chemicals, metals, electrical machinery, drugs/pharmaceuticals, etc. Major Indian imports from Iran include petroleum and its products, inorganic/organic chemicals, fertilizers, plastic and articles, edible fruits and nuts, glass and glassware, natural or cultured pearls, precious or semiprecious stones, etc.

An Indian Cultural Centre is currently functioning within the Embassy premises which was inaugurated in 2013. Iran has Cultural Centres in Delhi, Hyderabad and Mumbai. Indian Mission undertakes various cultural activities including Indian Cultural week, celebration of important days and events among others. The 3rd International Day of Yoga was celebrated at the Kendriya Vidyalaya school premises on June 21, 2017 in which more than 500 Iranians participated. Indian Embassy has been bringing out a bi-monthly magazine named "Aina-e-Hind' (Mirror of India) taking India to the drawing rooms of the general Iranian public.

The Theme for India-Islamic Republic of Iran Joint Issue represents "trade and commerce connectivity" featuring Deendayal Port - Kandla from Gujarat, India and Shahid Beheshti Port – Chabahar from Iran. The Miniature sheet design has structures of the Ashokan Pillar with a Lion at the top from India and Achaemenid Griffin of Iran which shows the strong bond between architectural history of two great civilizations.

Deendayal Port – Kandla

Deendayal Port's journey began in 1931 with construction of RCC Jetty by Maharao Khengarji. After partition, Deendayal Port's success story has continued and it rose to the No. 1 port in India in the year 2007-08 and since then has retained the position for the 9th consecutive year. On 31.03.2016, Deendayal Port created history by handling 100 MMT cargos in a year - the first major port to achieve the milestone. Kandla, also known as the Deendayal Port Trust is a seaport in Kutch District of Gujarat state in western India, near the city of Gandhidham. Located on the Gulf of Kutch, it is one of major ports on west coast. Kandla was the chief seaport serving western India, after the partition of India, left the port of Karachi in Pakistan. It is located on the Gulf of Kutch on the North Western coast of India some 256 nautical miles southeast of the Port of Karachi and over 430 nautical miles north-northwest of the Port of Mumbai.

Shahid Beheshti Port - Chabahar

Chabahar Port is strategically located on Iran's South Eastern Coast in the Sistan-Baluchistan Province. It lies in the Oman sea outside the Persian Gulf. The distance from Kandla to Chabahar is 550 nautical miles (approx 1018 km) and from Mumbai is 768 Nautical Miles (approx. 1422 km). The importance of Chabahar port is its potential to give India alternate access to Afghanistan. It has a huge commercial potential by offering access to the CIS countries, Russia and Europe through Iran.

India in partnership with Iran is developing Phase I of Shahid Beheshti Port - Chabahar. In 2016, the contract on Chabahar was signed which commits to Indian investment of USD 85 million for equipping the Chabahar port and Credit of USD 150 million for port development. The present capacity of the Port is 2.5 MT per year which comprises of Shahid Beheshti Port and Shahid Kalantari Port. Shahid Beheshti Port, with an area of 240 hectares, have 5 jetties presently, four of which would be dismantled so that ships with 70,000-80,000 Tons can berth. The phase 1 development plan for Shahid Beheshti Port, in which India is participating, covers one container terminal and one multipurpose terminal. Chabahar Port also includes Shahid Kalantari Port with an area of 30 hectares, having 5 jetties presently for small ships and has an overall capacity of handling 70-75,000 TEU per annum.

Department of Posts is pleased to release a set of two Commemorative Postage Stamps between India and Iran on the theme "Trade and Commerce Connectivity" featuring "Deendayal Port – Kandla" of India and "Shahid Beheshti Port – Chabahar" of Iran.

Credits :

Text : Material received from the Ministry of External Affairs and stamp design is based on material received from the Ministry of Shipping, Government of India

Stamps/Miniature Sheet/ FDC/Brochure : Shri Kamleshwar Singh

Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

भारत और ईरान इस्लामिक गणराज्य

संयुक्त डाक टिकट

Joint Issue of India and the Islamic Republic of Iran

विवरणिका BROCHURE

भारत और ईरान इस्लामिक गणराज्य

संयुक्त डाक टिकट

भारत–ईरान के संबंध शताब्दियों से रहे हैं, जिसके दौरान अर्थपूर्ण पारस्परिक संवाद होते रहे हैं। 1947 तक दोनों देश अपनी सीमाओं के साथ–साथ अपनी भाषा, संस्कृति तथा परम्पराओं की अनेक सामान्य विशेषताओं को भी साझा करते थे। भारत और ईरान के बीच 15 मार्च, 1950 को राजनयिक संबंध स्थापित हुए। तेहरान में भारतीय दूतावास के अतिरिक्त, ईरान में भारत के दो वाणिज्य–दूतावास भी हैं, एक बंदर अब्बास में है और दूसरा जहेदान में है। दोनों देशों के, विभिन्न स्तरों पर द्विपक्षीय परामर्शदात्री तंत्र हैं, जिनकी बैठकें नियमित रूप से होती है। दोनों देशों के विदेश कार्यालय भी द्विपक्षीय और क्षेत्रीय मामलों के संबंध में नियमित रूप से परामर्श करते हैं।

भारत–ईरान में आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध रहे हैं, जिसके अंतर्गत बहुत से क्षेत्र आते हैं, हालांकि इसमें परम्परागत रूप से भारत द्वारा ईरान के कच्चे तेल का आयात प्रमुख है। वित्तीय वर्ष 2016–17 के दौरान भारत–ईरान द्विपक्षीय व्यापार 12.89 बिलियन अमरीकी डालर मूल्य का था। भारत ने 10.5 बिलियन अमरीकी डालर मूल्य के माल, मुख्य रूप से कच्चे तेल का आयात किया और 2.4 बिलियन अमरीकी डालर मूल्यी की वस्तुओं का निर्यात किया। भारत द्वारा ईरान को किए जाने वाले निर्यात में मुख्य रूप से चावल, चाय, लोहा और इस्पात, आर्गेनिक रसायन, धातु, इलेक्ट्रिकल मशीनरी, औषध/फार्मास्युटिकल्स आदि वस्तुएं शामिल हैं। ईरान से भारत को किए जाने वाले आयात में पेट्रोलियम और इसके उत्पाद, गैर–आर्गेनिक/आर्गेनिक रसायन, उर्वरक, प्लास्टिक और इससे निर्मित वस्तुएं, खाद्य फल और मेवे, शीशा और शीशे से बनी वस्तुएं, प्राकृतिक अथवा कल्वर्ड मोती, मूल्यवान अथवा अल्प–मूल्यवान रत्न आदि शामिल हैं।

इस समय दूतावास परिसर में एक भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र कार्यरत है, जिसका उद्घाटन 2013 में किया गया था। ईरान के सांस्कृतिक केन्द्र दिल्ली, हैदराबाद और मुम्बई में हैं। भारतीय मिशन विभिन्न सांस्कृतिक कार्यकलाप आयोजित करता है, जिसमें भारतीय सांस्कृतिक सप्ताह के साथ–साथ महत्वपूर्ण दिवसों और अवसरों से संबंधित समारोहों का आयोजन शामिल है। तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2017 को केन्द्रीय विद्यालय के स्कूल परिसर में मनाया गया, जिसमें 500 से अधिक ईरानियों ने भागीदारी की। भारतीय दूतावास 'आइना–ए–हिन्द' (भारत का दर्पण) नामक एक द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन करता है, जिसके माध्यम से भारत आम ईरानी जनता के ड्राइंग–रूम तक पहुंच गया है।

भारत और ईरान इस्लामिक गणराज्य संयुक्त डाक–टिकट का विषय "व्यापार और वाणिज्यिक संबंध" है, जिसमें भारत से गुजरात दीनदयाल बंदरगाह–कंडला और ईरान से शाहिद बहिश्ती बंदरगाह–चाबहार को चित्रित किया गया है। मिनियेचर शीट डिज़ाइन में भारत के अशोक स्तम्भ सिंह और ईरान के आकेमेनिड ग्रिफिनके स्ट्रक्चर हैं, जो दो महान सभ्यताओं के बीच वास्तुशिल्पीय इतिहास के सुदृढ़ संबंधों को दर्शाते हैं।

दीनदयाल बंदरगाह–कंडला

दीनदयाल बंदरगाह का सफर 1931 में महाराव खेंगारजी द्वारा आरसीसी जेटी के निर्माण के साथ शुरू हुआ था। विभाजन के बाद, दीनदयाल बंदरगाह की सफलता की गाथा जारी रही और वह वर्ष 2007–08 में भारत का नंबर 1 बंदरगाह बन गया और तब से निरंतर 9 वर्षों से यह प्रथम स्थान पर बना हुआ है। दिनांक 31.03.2016 को, दीनदयाल बंदरगाह ने एक वर्ष में 100 मिलियन मी. टन नौभार को हैंडल करके इतिहास रचा था – इस उपलब्धि को हासिल करने वाला यह पहला प्रमुख बंदरगाह बना। कंडला, जिसे दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के नाम से भी जाना जाता है, पश्चिम भारत में गुजरात राज्य के कच्छ जिले में गांधीधाम शहर के निकट स्थित एक समुद्री बंदरगाह है। कच्छ की खाड़ी में स्थित, यह पश्चिमी तट के प्रमुख बंदरगाहों में से एक है। भारत के विभाजन के बाद, कराची का पोर्ट पाकिस्तान में चले जाने के कारण कंडला का निर्माण 1950 के दशक में पश्चिम भारत को सेवा प्रदान करने वाले प्रमुख समुद्री बंदरगाह के रूप में किया गया था। दीनदयाल पोर्ट भारत के उत्तर पश्चिमी तट पर कराची पोर्ट से दक्षिण पूर्व में लगभग 256 समुद्री मील और मुंबई पोर्ट (मुंबई) से उत्तर–उत्तर पश्चिम में 430 समुद्री मील से अधिक की दूरी पर कच्छ की खाड़ी में स्थित है।

शाहिद बहिश्ती बंदरगाह–चाबहार

चाबहार बंदरगाह सीस्तान–बलूचिस्तान प्रांत में ईरान के दक्षिण–पूर्वी तट पर स्थित है। यह फारस की खाड़ी से बाहर ओमान सागर में है। कंडला से चाबहार की दूरी 550 समुद्री (नॉटिकल) मील (लगभग 1018 कि. मी.) और मुम्बई से 768 समुद्री मील (लगभग 1422 कि. मी.) है। चाबहार बंदरगाह का महत्व इस संभावना से भी है कि यह भारत को अफगानिस्तान के लिए वैकल्पिक पहुंच प्रदान करता है। यह ईरान के माध्यम से सीआईएस देशों, रूस और यूरोप तक पहुंच प्रदान करता है, इसलिए यह भारी वाणिज्यिक संभावना वाला बंदरगाह है।

ईरान के साथ भागीदारी में भारत, शाहिद बहिश्ती बंदरगाह–चाबहार के चरण–। का विकास कर रहा है। इस उद्देश्य से वर्ष 2016 में एक करार पर हस्ताक्षर किए गए, जिसके अंतर्गत भारत ने चाबहार बंदरगाह में आवश्यक साजो–सामान हेतु 85 मिलियन अमरीकी डालर का निवेश करने और इस बंदरगाह के विकास के लिए 150 मिलियन अमरीकी डालर का ऋण देने पर सहमति व्यक्त की है। इस समय, बंदरगाह की क्षमता 2.5 मीट्रिक टन प्रतिवर्ष है, जिसमें शाहिद बहिश्ती बंदरगाह और कलंतरी बंदरगाह शामिल हैं। इस समय 240 हेक्टेयर क्षेत्र वाले शाहिद बहिश्ती बंदरगाह के पास, 5 जेट्टियां हैं, जिसमें से चार को हटाया जाएगा, ताकि 70,000–80,000 टन क्षमता वाले जहाजों को जगह दी जा सके। शाहिद बहिश्ती बंदरगाह की चरण–। की विकास योजना, जिसमें भारत भाग ले रहा है, में एक कंटेनर टर्मिनल और एक बहुउद्देशीय टर्मिनल शामिल है। चाबहार बंदरगाह में 30 हेक्टेयर क्षेत्र वाला शाहिद कलंतरी बंदरगाह भी शामिल है, जिसके पास छोटे जहाजों के लिए इस समय 5 जेट्टियां हैं और इसकी कुल हैंडलिंग क्षमता 70–75,000 टीईयू प्रतिवर्ष है।

डाक विभाग, "व्यापार और वाणिज्यिक संबंध" विषय पर भारत और ईरान के दो स्मारक डाक–टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। इन डाक–टिकटों पर भारत के "दीनदयाल बंदरगाह–कंडला" और ईरान के "शाहिद बहिश्ती बंदरगाह–चाबहार" को दर्शाया गया है।

आभार :–

पाठ : विदेश मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त सामग्री पर आधारित और डाक–टिकट डिज़ाइन पोत परिवहन मंत्रालय, भारत सरकार से प्राप्त सामग्री पर आधारित।

डाक–टिकट/मिनियेचर शीट/
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका : श्री कमलेश्वर सिंह

विरुपण मोहर : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	2500 पैसा, 500 पैसा
Denomination	:	2500p, 500p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	501000 प्रत्येक
Stamps Printed	:	501000 each
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1 लाख
Miniature Sheet Printed	:	1 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: 5.00